चम्पारण में गाँधी

अवधेश कुमार

गांधी की अफ्रीकी आन्दोलन की सफलता का व्यापक असर पड़ा। 1916 में लखनऊ कांग्रेस में चम्पारण के दुःख–दर्द को गांधी के समक्ष उपस्थित किया गया। अपनी आत्म कथा में गांधी ने स्वंय इस संदर्भ में लिखा है–''राजकुमार शुक्ल स्वंय चम्पारण के एक किसान थे। उन पर दुख से उनके भीतर नील का धब्बा सबके लिए धो डालने की आग जली। मैं लखनऊ की महासभा में गया था। वहाँ इन किसानो ने मेरा पल्ला पकड़ा ''वकील बाबू आपको सब हाल बतायेंगे'' यह कहते जाते और मुझे चम्पारण आने का निमंत्रण देते जाते थे। वकील बाबू से मतलव था मेरे चम्पारण के प्रिय साथी बिहार की सेवा जीवन के प्राण–ब्रजकिशोर बाबू। राजकुमार शुक्ल उन्हे मेरे तम्बू मे लाए। उन्होने काले आलपाकर की अचकन–पतलुन, आदि पहन रखी थी। मेरे मन पर उनकी कोई अच्छी छाप न पड़ी। मैं मान लिया कि वह भोले किसानो को लुटने वाले कोई वकील साहब होगे।